A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

उत्तर प्रदेश में भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा एवं सांगीतिक कार्यक्रमों का योगदान

Shreya Mishra[1], Professor Sangeeta Singh[2]

1. Research Student, Instrumental Department, Faculty of Music and Performing Arts. Banaras Hindu University
2. Professor, Instrumental Department, Faculty of Music and Performing Arts. Banaras Hindu University

OPEN ACCESS

सार

जब भी संगीत की समृद्ध उपलब्धियों की चर्चा होती है तो स्वाभाविक रूप से उत्तर भारत का स्थान सर्वश्रेष्ठ हो जाता है| उत्तर प्रदेश में संगीत की परंपरा कई सदियों से चली आ रही है| यहां की संगीत की उपलब्धियां के अंतर्गत प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक संगीत की परंपरा, घराने, गायन शैलियों, कलाकार व उनकी संगति की योगदानों की ओर हमारा ध्यान बराबर आकर्षित हो जाता है उत्तर भारतीय संगीत में उत्कृष्ट एवं विद्वान कलाकार हुए हैं जिन्होंने एक लंबी शिष्य परंपरा शास्त्रीय संगीत को दी है और आज वही शिष्य विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त कर अपनी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं और शिक्षा प्रदान कर रहे हैं| उत्तर प्रदेश में वृंदावन, काशी, मथुरा और अयोध्या जैसे सांस्कृतिक केंद्र भी हैं| वास्तव में यह स्थान सदियों से संगीत तथा विविध कलाओं के केंद्र हैं, जहां ध्रुपद, धमार, हवेली संगीत, समाज संगीत और विविध वाद्य यंत्रों के उत्कृष्ट कलाकारों ने भारतीय संगीत को दिशा प्रदान की|1 उत्तर प्रदेश के कई अनेक कलाकारों द्वारा ख्याल ठुमरी दादरा का भी प्रचार- प्रसार हुआ| उत्तर प्रदेश में कई ऐसे सांगीतिक कार्यक्रम भी होते हैं जिनके माध्यम से हम चली आ रही परंपरा को निरंतर रूप से जीवित रखते हैं|

मुख्य शब्द- शास्त्रीय संगीत, संगीत परंपरा, सांगीतिक कार्यक्रम, उत्तर प्रदेश

विषय प्रवेश

उत्तर प्रदेश, भारत के विशाल क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जहां भारतीय संस्कृति तथा संगीत का विकास हुआ | उत्तर प्रदेश में ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, कजरी, चैती जैसे कई सुगम संगीत के कई रूप निरंतर विकसित हुए| उत्तर प्रदेश, समाज के विभिन्न स्तरों में विभिन्न संगीत और परंपराओं का एक समृद्ध भंडार है तथा इसमें प्रदर्शन के अनेक स्तर हैं| भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास पूर्व से ही उपलब्धियों का इतिहास रहा है| इसका आधार और विकास मुख्य रूप से शास्त्रीय संगीत की समृद्धि शैली गायन शैलियों और उनके परंपराओं से रहा है| वैसे तो ध्रुपद गायकी का आविष्कार का श्रेय ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर को दिया जाता है लेकिन उत्तर प्रदेश में ध्रुपद की भक्ति पूर्ण गायकी मथुरा, वृंदावन, अयोध्या व वाराणसी जैसे धार्मिक स्थान थे जहां ध्रुपद-धमार का विकास हुआ| तानसेन के कारण ही आगरा, ध्रुपद गायन का केंद्र बना उनकी रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग मिलता है ध्रुपद के साथ ही धमार का भी विकास ब्रज में हुआ वहां की होली और लोक संगीत काफी प्रचलित है| ब्रज के अलावा अयोध्या और वाराणसी भी ध्रुपद के केंद्र रहे हैं| पंडित बड़े रामदास जी और पंडित हरिशंकर मिश्रा जी के ध्रुपद गायक की लंबी शिष्य परंपरा है| इस प्रकार हम देख सकते हैं कि ध्रुपद-धमार गायन शैली ने संपूर्ण उत्तर भारत को प्रभावित किया| ध्रुपद- धमार के साथ ही ख्याल का विकास भी उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के सुल्तान हुसैन शर्की को जाता है| काशी की ख्याल गायकी परंपरा में बड़े रामदास जी, छोटे रामदास जी ,पंडित राजन- साजन मिश्रा जी प्रमुख रूप से जाने जाते हैं| वाराणसी के अलावा भी उत्तर प्रदेश में अनेक ख्याल गायक कलाकार हुए हैं| उत्तर प्रदेश के कई शहरों में संगीत व संगीत घरानेदारों की एक लंबी परंपरा है| वाराणसी और लखनऊ की ठुमरी गायकी काफी प्रसिद्ध है |लखनऊ के वाजिद अली शाह की दरबार में ठुमरी तथा कथक नृत्य काफी प्रसिद्ध है, जिसकी गायकी का श्रेय पंडित बिंदादिन महाराज एवं उस्ताद सादिक अली को जाता है| बनारस की पूर्व अंग की ठुमरी का श्रेय रसूलन बाई, सिद्धेश्वरी देवी, पंडित महादेव मिश्र एवं गिरिजा देवी जी की एक लंबी श्रृंखला है| उत्तर प्रदेश के कई बड़े शहरों के साथ ही साथ यहां के छोटे शहर भी संगीत व घरानेदार संगीतज्ञों से जुड़े रहे हैं| उत्तर प्रदेश ने भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत को कई सितारे दिए हैं| भारतीय शास्त्रीय संगीत की संबंध में उत्तर प्रदेश के दो प्रमुख संगीत के केंद्र लखनऊ और बनारस की सांगीतिक पृष्ठभूमि ने प्रमुख भूमिका निभाई है| उत्तर प्रदेश में कई कलाकारों के साथ ही संगीत के क्रमिक विकास में यहां के कई मुख्य तथा प्रमुख सांगीतिक कार्यक्रम भी निरंतर रूप से जुड़े हैं, जिससे संगीत जगत में काफी विकास हुआ|

उत्तर प्रदेश में यहां के घराने, कलाकार और संगीत महोत्सव ने न केवल भारत में बल्कि देश विदेश में भी सम्मान प्राप्त किए हैं| यहां की संगीत परंपरा मंदिरों, दरबारों और घरानों से संगीतज्ञ द्वारा होते हुए आज अनेकों बड़े मंचों तक पहुंची है| उत्तर प्रदेश सदैव भारतीय शास्त्रीय संगीत की

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

समृद्ध परंपरा का केंद्र रहा है| यहां पर हर वर्ष अनेकों सांगीतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो हिंदुस्तानी संगीत को संरक्षित एवं प्रसारित करते हैं यहां की संगीत कार्यक्रमों की कई सदियों से एक लंबी श्रृंखला चली आ रही है जिनमें से कुछ प्रमुख है जैसे काशी का संकट मोचन संगीत समारोह जहां पर अनेकों बड़े कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति देकर यहां की संगीत परंपरा एवं विरासत को जिंदा रखा है| इसी प्रकार तुलसी घाट पर आयोजित ध्रुपद महोत्सव प्रत्येक वर्ष आयोजित होता है जिसका काशी वासियों को बेसब्री से इंतजार होता है| इसमें ध्रुपद विद्या से जुड़े विख्यात ध्रुपद गायक का गायन वह मृदंग वादन होता है इस आयोजन में संकट मोचन के महंत प्रोफेसर विशंभर नाथ मिश्रा जी ने भी कई बार अपनी प्रस्तुति दी जो यहां के गुणी श्रोताओं द्वारा काफी प्रशंसा और सराहा जाता है | प्रकार नवरात्रि में मां दुर्गा मंदिर पर आयोजित दुर्गा महोत्सव मां के तट पर आयोजित की जाती है, जिसमें मैंने स्वयं पंडित राजेंद्र प्रसन्ना जी का बांसुरी वादन एवं उनके साथ ही बनारस घराने के प्रसिद्ध तबला वादक पंडित संजू सहाय मिश्रा जी की प्रस्तुति सुनी जो की बहुत ही अद्भुत एवं सुमधुर रही|

काशी में ही हर दिन सुबह बनारस, अस्सी घाट पर आयोजित किया जाता है तथा शीतला महोत्सव और इसके साथ ही साथ समय-समय पर बाजरे पर भी कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं| इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में कई सांस्कृतिक महोत्सव है जिनकी आयोजनों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विविध शैलियों जैसे कि ध्रुपद, धमार, ख्याल ठुमरी आदि का प्रदर्शन होता है| इसी श्रृंखला में कई संस्था एवं अकादमी भी शामिल है तथा इस संस्थान में शास्त्रीय संगीत जिसमें गायन वादन एवं नृत्य तथा नाटक आदि के क्षेत्र में खोज एवं उन प्रदर्शनों को बढ़ावा दिया जाता है| उत्तर प्रदेश न केवल महान एवं दिग्गज कलाकारों की भूमि रही है, बल्कि यहां के विभिन्न संगीत कार्यक्रम, भारतीय शास्त्रीय संगीत का गौरव एवं गरिमा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं|

काशी और प्रयागराज में आयोजित कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मैं भी उपस्थित रही| कार्यक्रम को सुनने एवं विख्यात कलाकारों से साक्षात्कार का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ वह मेरे लिए अविस्मरणीय है| ऐसे विख्यात कलाकारों का कार्यक्रम सुनकर एवं उनसे बात कर मैं अपने को धन्य महसूस करती हूं| अपनी कला में माहिर यह कलाकार बहुत ही शांत, सुशील एवं प्रेमी होते हैं लोगों से प्रेम भाव से मिलकर सबका दिल जीत लेते हैं| ऐसे ही कुछ कलाकारों से मिलकर मैंने उनका एक छोटा सा साक्षात्कार भी लिया जिनसे मिलकर यह पता चला कि किस तरह संगीत को निरंतर अभ्यास करके एवं संगीत को सुनकर, उसे किस तरह प्रगति के शिखर पर पहुंचाया जा सकता है | काशी के दुर्गा मंदिर पर आयोजित श्री कूष्मांडा दुर्गा जी वार्षिक श्रृंगार महोत्सव में एक सितंबर को विख्यात बांसुरी वादक पंडित राजेंद्र प्रसन्ना जी एवं वाराणसी के विख्यात तबला वादक पंडित संजू सहाय जी का कार्यक्रम बहुत ही सुमधुर रहा| 2 नवंबर को अस्सी घाट वाराणसी पर गंगा महोत्सव के आयोजन में बनारस करने के विख्यात गायक पद्म भूषण पंडित सजन मिश्रा एवं उनके सुयोग पुत्र स्वरांश मिश्रा का गायन सुना, उनके जैसा सहज एवं मिलनसार व्यक्तित्व वाले कलाकार पंडित साजन मिश्री जी से मिलकर मुझे कार्यक्रमों के बारे में और भी कई जानकारी प्राप्त हुई और इसी क्रम में पंडित ओमकारनाथ ठाकुर प्रेक्षा गृह में भी संगीत एवं मंच कला संकाय द्वारा आयोजित 75th कौस्तुभ जयंती समारोह में 14 सितंबर को पंडित सलिल भट्ट तथा 23 सितंबर को डॉ राकेश कुमार एवं डॉक्टर कुमार अंबरीश चंचल 18 अक्टूबर को श्रीमती इंद्राणी मुखर्जी एवं पंडित रामकुमार मिश्र एवं 5 दिसंबर को पंडित संजू सहाय जी के भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर मुझे संगीत के बारे में काफी कुछ सीखने, सुनने का अवसर मिला| शिल्प हॉट संस्कृति केंद्र परिसर, प्रयागराज में आयोजित उत्तर भारत क्षेत्र सांस्कृतिक कार्यक्रम 27 अक्टूबर को ईशान मिश्रा तथा उन्हें के साथ और भी अन्य कलाकारों का कार्यक्रम सुना| इसी क्रम में 3 से 5 अक्टूबर त्रिदिवसीय कार्यशाला डॉक्टर सुचारिता गुप्ता द्वारा वर्कशॉप, पंडित लालमणि मिश्रा संग्रालय में संगीत एवं मंच कला द्वारा ही आयोजित हुआ, उसमें भी सभी विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिला| इस तरह से हम देख सकते हैं कि इन कार्यक्रमों एवं संगोष्ठी से आने वाले कल के बच्चों को बहुत कुछ सीखने को मिलता है, एवं साथ ही वे शास्त्रीय संगीत से जुड़े रहते है|

इन कार्यक्रमों के माध्यम से कई पुराने घरानों की संगीत परंपरा जीवित रहती है साथ ही साथ नहीं पीढ़ियों को शास्त्री संगीत की प्रेरणा देते हुए उन्हें उनसे जोड़े रखती है| कई बार इसमें लोक संगीत व शास्त्री संगीत का संगम होता है जिससे संगीत और भी समृद्ध बनता है उत्तर प्रदेश में शास्त्रीय संगीत को संरक्षित रखने के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित होते हैं साथ ही साथ संगीत प्रेमियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत से जोड़े रखता है| यहां पर हो रहे कार्यक्रम न केवल इस परंपरागत शास्त्रीय संगीत की सेवा, रक्षा कर रहे हैं बल्कि उसे संगीत को नई पीढ़ी तक पहुंचने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं| इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अनेक कलाकारों को मंच तथा संगीत प्रेमी श्रोताओं को आनंद तथा समाज को सांस्कृतिक गौरव प्राप्त होता है| उत्तर भारत की संगीत परंपरा में हर संगीतज्ञों एवं शास्त्रज्ञों की भी अनगिनत योगदाने रही हैं| बनारस की स्वर्गीय डॉक्टर प्रेमलता शर्मा जी ने अनेक शास्त्रों की रचना की है| काशी के ही प्रोफेसर चितरंजन ज्योतिषी ने निष्ठावान कला साधना से संगीत जगत में

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

अपना निरुपम योगदान दिया है| कलाकारों संगीतकारों शास्त्रकारों के अतिरिक्त उत्तर भारत में संगीत की परंपराओं को सुरक्षित एवं विकसित करने के उद्देश्य से अनगिनत सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएं भी कार्यरत हैं, जिन्होंने संगीत समारोह, परिचर्चाओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न सांगीतिक शैलियों को सम्यक रूप से प्रचारित प्रसारित किया है, जिसके परिणाम स्वरुप आज उत्तर भारत की संगीत परंपरा के अस्तित्व सुरक्षित हैं|2 जैसे उत्तर प्रदेश में काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, भातखंडे विश्वविद्यालय लखनऊ, तथा प्रयाग संगीत समिति एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज तथा अन्य का भी विशेष योगदान रहा है, जहां पर गायन वादन एवं नृत्य तथा शास्त्र की शिक्षा उच्च स्तर पर दी जाती है| इसी प्रकार हम देखते हैं कि उत्तर प्रदेश में अनेकों संस्थागत प्रणालियों विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा प्राचीन शास्त्रीय संगीत को निरंतर रूप से जीवित रख बच्चों को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रदान की जाती है, जिसके द्वारा यह शास्त्री संगीत चलती आ रही परंपरा से पीढ़ी दर पीढ़ी आने वाले समय में सभी में भी जीवित रहेगी| देश की संगीत परंपराओं की समृद्धि एवं विकास में विभिन्न प्रादेशिक संगीत नाटक अकादमियों का भी विशेष योगदान है| सांगीतिक धरोहर को बनाए रखने के उद्देश्य में इन अकादमियों द्वारा संपादित प्रमुख कार्य हैं जैसे संगीत संगोष्ठी एवं प्रदर्शन, सर्वेक्षण एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में, परिचर्चा एवं कार्यशालाओं का आयोजन, स्टूडियो रिकॉर्डिंग, नवोदित कलाकारों का प्रोत्साहन, संगीत सम्मेलनों की परंपरा आदि के द्वारा संगीत के विकास में बहुत सहायता प्राप्त होती है|3 इसी प्रकार हम देखते हैं की भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा को विकसित एवं प्रचलित करने में उत्तर प्रदेश के अन्य संस्थाएं भी अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं| जैसे आकाशवाणी, प्रेस पुस्तक, पत्र पत्रिकाएं, दूरदर्शन आदि तथा इसी क्रम में `संगीत संकल्प' तथा 'स्पीक मैके' जैसी कई संस्थाएं भी कार्यरत हैं जो कलाकारों को प्रेरणा देती है व उन्हें उत्तेजित करती है तथा साथ ही उनकी कला को श्रोताओं तक पहुचाँती है|

निष्कर्ष

वर्तमान समय में हम आज की स्थिति तथा चुनौतियों को भी ध्यान में रखते हुए यह जानते हैं कि आज के समय में पॉप संगीत व वेस्टर्न म्यूजिक का प्रभाव अब की पीढ़ियों तथा युवाओं पर अधिक हो रहा है परंतु कई रूप से डिजिटल मंचों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को नया जीवन प्राप्त हुआ है| अब के वर्तमान समय में यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ऑनलाइन म्यूजिक क्लासेस ने इस शास्त्रीय संगीत को युवाओं से जोड़ रखा है, परंतु हमें अभी भी जरूरत है कि शास्त्री संगीत को कई विद्यालयों में एक पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया जाए, जिससे यह नई पीढ़ियों से आगे भी जुड़ी रहे| वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए हमें आज आवश्यकता अनुसार उत्तर प्रदेश की मूल सांगीतिक परंपरा को आगे बढ़ाए जाने का प्रयास करना चाहिए, ताकि यहां के कलाकार अपनी परंपरा को कायम रखते हुए उसे पुष्पित तथा पल्लवित और विकसित कर सकें और इसी प्रकार 'उत्तर प्रदेश' भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा को जीवित रखने में एक सशक्त स्तंभ के रूप में कार्य करता रहे|

सन्दर्भ

1.प्रो० स्वतन्त्र शर्मा (द्वितीय संस्करण 2014), भारतीय संगीत: एक ऐतिहासिक विश्लेषण Pg No. 397
2. प्रो० स्वतन्त्र शर्मा (द्वितीय संस्करण 2014), भारतीय संगीत: एक ऐतिहासिक विश्लेषण Pg No.402
3. प्रो० स्वतन्त्र शर्मा (द्वितीय संस्करण 2014), भारतीय संगीत: एक ऐतिहासिक विश्लेषण Pg No.402